जब से चार हुई हैं अँखियाँ

पागल दिल करता है बतियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

दिन में पड़ता नहीं चैन है,
होती कोरी आँख रैन है,
खुस-पुस करती रहती सखियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

खाना पीना नहीं सुहाता
कोई दृश्य न मन को भाता,
करवट बदलूँ सारी रतियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

मन-मंदिर में मूरत तेरी,
दशा हुई जोगिन-सी मेरी।
तुम्हें निहारूँ इत-उत गलियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

पिया याद में बिंदी चमके,
अधरों पर मधु-लाली दमके।
गिनती रोज़ मिलन की घड़ियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

पलक बिछाती मैं राहों में,
भर लो तुम आ के बाँहों में।
मुरझाए न प्रीत की कलियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ

मेरी साँसों में तुम रहते,
चुपके-चुपके कुछ तो कहते,
पल-पल बीते जैसे सदियाँ।
जब से चार हुई हैं अँखियाँ।।

इसी पुस्तक से....

डॉ. भावना एन. सावलिया

माता : वनिता बहन नानजीभाई सावलिया
पिता : नानजीभाई टपुभाई सावलिया
स्थायी पता : हरमडिया, वाया ता. गोंडल, जिला-राजकोट, सौराष्ट्र (गुजरात)
मोबाइल : 8849842456
ईमेल : savaliabhavna501@gmail.com
शिक्षा : एम. ए., एम.फिल., पीएच.डी., जोसेट

सम्प्रति : अध्यापन कार्य, आर्ट्स कॉलेज मोडासा, जिला अरवल्ली (गुजरात)

प्रकाशन : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में 35 से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित
150 से अधिक पद्य रचनाएँ साझा संकलनों में और विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित
(1) 'महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में नारी चेतना' 2013
(2) 'कविता सागर' (काव्य संग्रह) 2017,

प्रकाश्य : (1) हमसफ़र (काव्य संग्रह), (2) साहित्यिक बिंदु (आलोचनात्मक ग्रंथ)
(3) महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का तात्त्विक विवेचन (आलोचना)

अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड : विश्व हिन्दी लेखिका मंच द्वारा 'महादेवी वर्मा मेमोरियल अवार्ड' इन्दौर, 2019
अंतर्राष्ट्रीय सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन 'विशिष्ट प्रतिभा सम्मान' भीलवाड़ा राजस्थान
'अग्निशिखा' साहित्य गौरव सम्मान, मुंबई, 2019
साहित्य शिरोमणि सम्मान, वर्धा 2020
विश्व हिन्दी साहित्यकार मंच द्वारा 'मातृभूमि सम्मान', भोपाल, 2019
विश्व हिन्दी लेखिका मंच द्वारा 'श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान' दिल्ली, 2020

राष्ट्रीय अवार्ड : महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य में नारी चेतना पुस्तक को 'राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज नेशनल अवार्ड' जलगांव 2013
गंगा ज्ञानेश्वरी गौरव, जलगांव 2014
'कविता सागर' काव्य संग्रह को राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान पर 'राष्ट्रीय अमृतादित्य गौरव अवार्ड' जलगांव 2018
'कविता सागर' काव्य संग्रह को 'साहित्य श्री सम्मान', नासिक 2019
छन्दबद्ध साहित्य सृजन के लिए 'छन्द शिल्पी सम्मान' आगरा 2021

अन्य सम्मान : ज्ञाति प्रतिभा सम्मान, जामनगर, सौराष्ट्र 2013
लेखन प्रतिभा सम्मान, जामकंडोरणा, सौराष्ट्र 2014
सारस्वत सम्मान, राजकोट, सौराष्ट्र 2017
विश्व हिन्दी साहित्यकार मंच द्वारा 'मातृभूमि सम्मान' 2019

Also available on: amazon.in

Shubhanjali Prakashan
28/11, Ajitganj Colony, T. P. Nagar, Kanpur-208023. Mob. 08707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

₹=250/-

जब से चार हुई हैं अँखियाँ • डॉ. भावना एन. सावलिया

जब से चार हुई हैं अँखियाँ

(छन्दबद्ध काव्य संग्रह)

डॉ. भावना एन. सावलिया

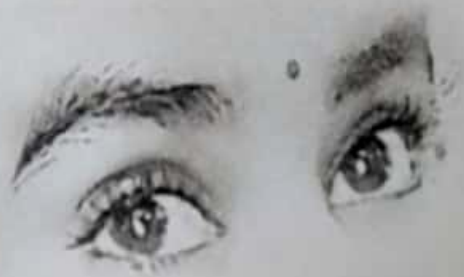

छंदबद्ध कविता के सृजन और संवर्धन के प्रति विगत दो वर्षों से डॉ. भावना सावलिया जी मेरे द्वारा संचालित व्हाट्सअप साहित्यिक समूह 'काव्य सृजन परिवार' से जुड़ी हैं जिसमें विविध छंदों पर आधारित छंद विधानयुक्त सृजन सिखाया जाता है। डॉ. भावना जी ने लगभग अर्द्ध शतक छंदों में सृजन कार्य कर लिया है उसी के अंतर्गत इस काव्य पुस्तिका में वार्णिक एवं मात्रिक छंदों का समावेश बड़े ही सुंदरतम ढंग से किया है।

काव्य-संकलन 'जब से चार हुई हैं अँखियाँ' में अनेक प्रचलित और अप्रचलित भारतीय सनातनी छंदों का पुनीत परिवेश में सम्मोहक प्रयोग देखने को मिलता है जिसमें मनोरम, रोला, त्रिभंगी, सगुण, शृंगार, महाशृंगार, सार, रूपमाला, गीतिका, विष्णुपद, वीर, मरहठा, कुण्डल, मत्तसवैया, मदिरा सवैया, दोहा, कुंडलिनी, राधेश्यामी, गंगोदक सवैया, रजनी, कुंडलियाँ, तोटक, ताटंक, शुद्ध गीता, चकोरी, सारस, पद्धरि, मालती, पञ्चचामर, कुकुभ, चौपाई, छप्पय, आदि वाचिक परम्परा के अनेक छंदों का विधानगत निर्वाह काव्यगत एवं भावगत के साथ शिल्पगत सौंदर्य भी अद्वितीय है। प्रकाशित संग्रह में भावना जी की अनेक मनोहारी रचना हैं जो पाठकों के ध्यान को सहज आकर्षित करने की क्षमता रखती हैं।

इसी पुस्तक से....

Scanned by CamScanner

जब से चार हुई हैं अँखियाँ

डॉ. भावना एन. सावलिया

Shubhanjali Prakashan

Scanned by CamScanner

9 788195 194070

ISBN : 978-81-951940-7-0

© डॉ. भावना एन. सावलिया (सर्वाधिकार लेखकाधीन)

गुजरात साहित्य अकादमी के
आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक :

शुभाञ्जलि प्रकाशन
28/11, अजीतगंज कॉलोनी,
टी. पी. नगर, कानपुर-208023
मोबाइल : +91 8707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2022 (प्रतियाँ : पाँच सौ)

मूल्य :

सजिल्द : ₹ 250/- (रुपये दो सौ पचास मात्र)

आवरण सज्जा :

इंजी. रिन्की चन्द्रा

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Jabse Char Hui Hain Ankhiyan (Poetry)
By : Dr. Bhavana N. Sanwalia

समर्पण

धर्मेश को श्रद्धांजलि

रुख़सत सदा को हो गए जो फिर न आने के लिए।
गहरों ग़मों के साथ हम सबको रुलाने के लिए।

यह अश्रुपूरित प्रिय अनुज धर्मेश को श्रद्धाञ्जली,
सादर समर्पित यह उन्हें मेरी प्रथम काव्याञ्जली।

- डॉ. भावना एन. सावलिया

Scanned by CamScanner